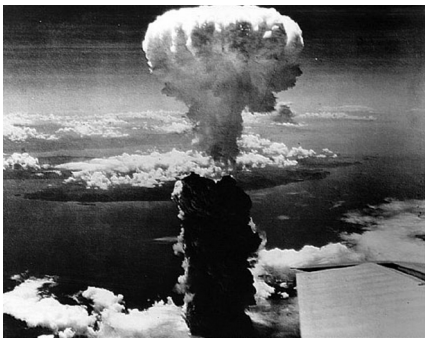

संध्या रायचौधरी

हिरोशिमा और नागासाकी

तबाही के 68 साल

83 वर्षीय जापानी लेखक योशोमितो ओ हितोमी की पिछले दिनों प्रकाशित पुस्तक *एंडलेस डार्कनेस बिहाइंड द ट्रेजेडी* का एक-एक शब्द दुख, पीड़ा, आक्रोश और उदासी में लिपटा है। यह पुस्तक हिरोशिमा और नागासाकी पर हुए परमाणु हमले की त्रासद कथा है।

68 साल पहले अमरीका ने जापान के दो शहरों हिरोशिमा और नागासाकी पर परमाणु बम का हमला किया था जिसमें दो-ढाई लाख से भी ज़्यादा लोग मारे गए थे। हितोमी उस समय 15 वर्ष के थे और पढ़ने के लिए किसी दूसरे देश में गए थे। यह पुस्तक वे पिछले 10 सालों से लिख रहे थे। हितोमी को बाल मन पर अंकित उस खौफनाक मंज़र को कागज़ पर उतारने में वर्षों लग गए।

वे लिखते हैं अभी तक मैं उस त्रासदी का उत्तर नहीं खोज पाया कि ऐसा क्यों हुआ? मेरे पूवर्जों की क्या गलती थी? मेरा दिल हाहाकार करते हुए आज भी नहीं थकता।

उन्होंने पुस्तक का प्रारंभ इस लाइन से किया है, ''परमाणु बम एक ब्रह्मास्त्र है, जिससे दुनिया को नष्ट किया जा सकता है।'' सचमुच में दुनिया के दुष्ट राष्ट्रों के पास इतने परमाणु बम हैं कि लगभग 1000 दफे धरती को नष्ट किया जा सकता है। स्टीफन हॉकिंग्स को सबसे अधिक डर परमाणु बम से ही लगता है।

हिरोशिमा दुनिया का पहला ऐसा शहर है जहां अमरीका ने 6 अगस्त 1945 को परमाणु बम गिराए। इसके तीन दिन बाद 9 अगस्त को नागासाकी पर परमाणु बम गिराया गया। इस बमबारी के कारण दो से चार महीनों के भीतर हिरोशिमा में 90 हज़ार से 1 लाख 60 हज़ार और नागासाकी में 60 से 80 हज़ार लोग मारे गए थे। इसके बाद आने वाले महीनों में बड़ी संख्या में लोग जलन, रेडियोधर्मी बीमारी और अन्य चोटों की वजह से मारे गए।

इस परमाणु हमले का कोई सैन्य महत्व नहीं था। इन शहरों में हथियार बनाने वाले कारखाने नहीं थे, न ही वहां कोई बड़ा सैन्य जमाव था। अमरीका दरअसल सोवियत संघ के नेता स्टालिन को दिखाना चाहता था कि युद्ध के बाद दुनिया के भाग्य का फैसला कौन करेगा। इसके लिए उसने लाखों जापानी नागरिकों के जीवन बलिदान किए।

आज इस हमले को 68 वर्ष हो गए हैं लेकिन जापान का ये हिस्सा आज भी उस हमले से प्रभावित है। आज भी यहां पर पैदा हो रहे बच्चों पर इस हमले का असर साफ देखा जा सकता है। गौरतलब है कि परमाणु बम के इस्तेमाल से अमरीका ने न सिर्फ अपने उन्नत तकनीकी कौशल का प्रदर्शन किया, बल्कि वैश्विक राजनीति में अपनी निर्णायक भूमिका की शुरुआत भी की।

68 साल पहले 1945 की गर्मियों के अंतिम महीने में पॉट्सडैम शांति सम्मेलन के दौरान अमरीकी राष्ट्रपति हैरी ट्रूमैन ने इस बात का ऐलान किया कि अमरीका के पास एक नया सुपर हथियार है। वे शायद सोवियत नेता जोसेफ स्टालिन की आंखों में खौफ देखना चाहते थे। लेकिन स्टालिन ने ऐसा प्रभाव दिया जैसे कि कुछ भी नहीं हुआ है। और इसके कुछ ही दिनों के बाद हिरोशिमा और नागासाकी की त्रासदी ने पूरी दुनिया को हिलाकर रख दिया।

रूस के विश्व प्रसिद्ध बाल रोग विशेषज्ञ लियोनिद रॉशाल ने हिरोशिमा और नागासाकी की त्रासदी को अमरीकी आतंक और बर्बरता बताया। लियोनिद रॉशाल ने कहा ''ऐसा कोई भी कारण नहीं था कि निहत्थे लोगों पर, जिनका सेना से कोई सम्बंध नहीं था, परमाणु बम गिराए जाते। यह बम इन लोगों पर सिर्फ इसलिए गिराए गए क्योंकि वे जापानी लोग थे। ऐसे शहर नष्ट कर दिए गए जहां पर किसी प्रकार के हथियारों के कारखाने नहीं थे। बच्चों और वयस्कों की हज़ारों लाशें! शहरों की बर्बादी! इस बर्बरता को कभी भी उचित नहीं ठहराया जा सकता। किसी युद्ध में भी ऐसी बर्बरता को सही नहीं ठहराया जा सकता। मैं समझता हूं कि

युद्ध बर्बरता का ही दूसरा नाम है।"

उस क्षण से ही मानवजाति हथियारों की दौड़ में कूद पड़ी। नाभिकीय अस्त्र या परमाणु बम एक ऐसा बम है जो एक बार में दो शहर और दो बार में 4 शहरों की आबादी नष्ट कर सकता है। कई साल बीत जाने के बाद सोवियत संघ और संयुक्त राज्य अमरीका के नेताओं को दुनिया के भाग्य के लिए अपनी ज़िम्मेदारी का अहसास हुआ। कई दशकों में परमाणु हथियारों के विशाल भंडार जमा कर लिए गए। इन हथियारों से यह दोनों देश केवल एक-दूसरे को ही नहीं बल्कि पूरी मानव सभ्यता को कई बार नष्ट कर सकते थे। सौभाग्य से मानवजाति को फिर से कभी परमाणु हमले का मुंह देखना नहीं पड़ा है हालांकि आज समस्त विश्व सामूहिक विनाश के इन हथियारों के इस्तेमाल की दहलीज़ पर खड़ा है। ताकतवर देश बड़े गर्व से अपने पास परमाणु बम होने का दावा कर कमज़ोर देशों को डराते रहते हैं। शायद समस्त मानवजाति के लिए उत्पन्न इस भयंकर खतरे को भांपते हुए सोवियत संघ और संयुक्त राज्य अमरीका में विगत शताब्दी के सातवें दशक में परमाणु हथियारों को कम करने के तरीके खोजने की प्रक्रिया शुरू की गई थी। कहा जा रहा है जब दुनिया में राजनीतिक प्रणालियों की दौड़ समाप्त हो गई है, इन हथियारों की दौड़ बेमानी ही है। फिर भी आज अमरीका को एक शब्द में परिभाषित करने को कहा जाए तो अमूमन सभी की ज़ुबान पर एक ही शब्द होगा - दबंग। अमरीका आज भी दबंग है कल भी दबंग था। लेकिन आज जापान हर शक्ति का जवाब देने में सक्षम है। ***(स्रोत फीचर्स)***